## वार्तालाप नं. 463, काठमाण्डू (नेपाल), दिनांक 13.12.07 Disc.CD No.463, dated 13.12.07 at Kathmandu (Nepal)

समय-0.30-19.48

जिज्ञासु – बाबा, एक कन्फ्युजन चल रहा है कि जब दादा लेखराज यहाँ से, बनारस से गये थे साक्षात्कार के बाद में फिर सीधे सिंध हैदराबाद गये थे या सीधे कलकत्ता गये थे अपने प्रश्नों का उत्तर लेने के लिए? बाबा- बनारस से गये थे? जिज्ञास – जैसे वह अपने प्रश्नों का....जब साक्षात्कार हआ.... वो गरू के पास गये थे। तो उसके बाद बनारस में गये थे। बाबा- अपने गुरू से पूछा, फिर और गुरूओं से भी पूछा। जिज्ञास – अपने गुरू से पुछा, फिर वहाँ नहीं समझ में आया तो बनारस में गये। बाबा– हां जी। Time: 0.30-19.48 Student: Baba, there is a confusion going on [in my mind] that when Dada Lekhraj left Benares after having visions, did he go straight to Sindh, Hyderabad or did he go straight to Calcutta to take the answers to his questions? **Baba:** Did he go from Benares? Student: For example, for his questions.....when he had visions.....he went to his gurus. So, after that he went to Benares. **Baba:** He asked his *gurus*; then he asked other *gurus* as well. Student: He asked his guru, then, when he could not understand there, he went to Benares. Baba: Yes. जिज्ञास् – तो वहां से वापस जब आये..... बाबा- नहीं वापस नही आये। जिज्ञासु– तो कहां गये फिर? बाबा- अपनी गद्दी पे, पुरानी गद्दी पे। जिज्ञास् – कलकत्ता गये सीधा? बाबा – हां। जिज्ञास् – कि सिंध हैदराबाद में गये? बाबा— सिंध हैदराबाद में क्यों जायेंगे? वह तो अपनी लगन के पक्के थे। Student: So, when he returned from that place... Baba: No, he did not return. Student: So, then where did he go?

**Baba:** To his seat [of business], to his old seat.

**Student:** Did he go directly to Calcutta?

Baba: Yes.

Student: Or did he go to Sindh, Hyderabad?

Baba: Why will he go to Sindh, Hyderabad? He was firmly devoted.

जिज्ञास – और सबसे पहले जब सामने जो माताजी थी, गीता माता, सामने वो थी या जैसे रामवाली आत्मा भी पास में थी? बाबा– कमाल है बार–बार वहीं बातें। भूल जाते हैं।

जिज्ञास् – अभी भी कन्फ्युजन चल रही है बाबा।

बाबा- कन्फ्युजन क्यों चल रहा है जब बाबा बोलते हैं, मैं आता हूँ तो अकेले नहीं आता हूँ। कितनी मूर्तियों के साथ आता हूँ? तीन मूर्तियों के साथ आता हूँ, इसलिए मेरे को त्रिमूर्ति शिव कहा जाता है। मैं अकेला तो आता ही नहीं हूँ।

**Student:** And first of all, the mother who was in front, Gita *mata* (the mother Gita), was it she who was in front or was the soul of Ram also with her?

**Baba:** It is a wonder; you ask the same thing again and again. You forget.

**Student:** Baba, the confusion is still going on.

**Baba:** Why is the *confusion* going on when Baba says, when I come I do not come alone? With how many personalities (*murtis*) do I come? I come with three personalities. This is why I am called Trimurty Shiv. I do not come alone at all.

जिज्ञासु – लेकिन बाबा जब ब्रह्मा बाबा ने सुनाया..

बाबा – ब्रह्मा बाबा ने अलग से माताओं को सुनाया, फिर माताओं में से किसी एक माता ने जिसको ज्यादा हिम्मत थी; तो जैसे बड़े आदमी से बात करने के लिए भी तो हिम्मत चाहिए। नहीं तो ब्रह्मा बाबा खुद ही अपने भागीदार को बता देते। खुद बताने की हिम्मत नहीं हुई। कृष्ण तो बच्चा है ना! तो बच्चा ज्यादा लगा हुआ किससे होता है? माँ से ज्यादा लिपटा हुआ होता है; तो माँ को जाके बताया।

जिज्ञासु – उस समय सेवकराम नहीं थे ?

<u>बाबा</u> – क्यों नहीं थे? जब ब्रह्मा बाबा ने बताया तब नहीं थे। जब माताओं ने पूछा तब मातायें थी दोनों।

Student: But Baba, when Brahma Baba narrated....

**Baba:** Brahma Baba narrated separately to the mothers; then the mother who was more courageous between them.... courage is required to speak to big personalities. Otherwise, Brahma Baba would have told himself [about the visions to] his partner. He did not have courage to tell himself. Krishna is a child, isn't he? So, with whom is a child more attached? A child is more attached to the mother. So, he went and narrated to the mother.

Student: Was Sevakram not present at that time?

**Baba:** Why not? When Brahma Baba narrated [about his visions to the mother], he was not present. When the mothers asked [Sevakram], at that time both the mothers were present.

# जिज्ञासु –नहीं शुरू में साक्षात्कार जो बताया वो?

<u>बाबा</u> सिंध हैदराबाद में हुए। सिंध हैदराबाद की बातों को वो इधर—उधर भटकते रहे, पूछते रहे। कहीं से पता नहीं चला। लास्ट में फिर अपनी गद्दी पर पहुँचे। अपनी जीवन के अनुभव के आधार पर कि हमने अपने जीवन में सबसे सच्चा व्यक्ति किसको पाया? तो अपने भागीदार को सच्चा व्यक्ति देखा उन्होंने, ज्यादा होशियार भी था; उनसे भी ज्यादा रत्नों का पारखी था; लेकिन गरीब था। जवाहरी तो था उनका भागीदार; लेकिन जो सच्चा होता है सच्चाई से काम करता है उसकी दुकान आज की दुनिया में नहीं चलती। और झूठे जो होते हैं उनका धंधा खूब फलीभूत होता है। है ही झूठ की दुनिया।

Student: No, [about] the visions that he narrated in the beginning...

**Baba:** He had visions in Sindh, Hyderabad. [To find an answer to] whatever happened in Sindh, Hyderabad, he kept wandering, asking about them. He did not find [an answer] anywhere. Then at last he reached his seat of business. On the basis of his life experience, whom did he find to be the most truthful person in his life? So, he found his partner to be the most truthful person; he was cleverer too. He was a better judge of gems, but he was poor. His partner was indeed a jeweler; but the one who is truthful, the one who works truthfully, his shop does not run well in today's world. Wheras, the business of liars flourishes a lot. It is indeed a world of falsehood.

ब्रह्मा बाबा जो है, वो तो कृष्ण की आत्मा है ना! कृष्ण की राशि किससे मिलाई जाती है? क्राईस्ट से मिलाई जाती है, क्यों मिलाई जाती है? क्योंकि क्राईस्ट ने जो सिखाया उसके आधार पर क्रिश्चियन्स पॉम्प एण्ड शो वाले बन गये। क्या? बाहर से बहुत खुश—खुश, मीठे—मीठे, और अंदर से? अंदर से खार भरा हुआ है। तो कृष्ण और क्राईस्ट की राशि मिलाई जाती हैं। Brahma Baba is the soul of Krishna, isn't he? With whose [horoscope] is the horoscope of Krishna matched? It is matched with [the horoscope of] Christ; why is it matched [with Christ]? It is because on the basis of whatever Christ taught, the Christians adopted pomp and show. What? They are very happy, very sweet from outside and from within? There is anger within. So, the horoscope of Krishna and Christ is matched.

अभी दुनिया में ज्यादा सुख और ज्यादा सतोप्रधान आत्मा कौनसी दिखायी पड़ती है? क्रिश्चियन्स। भारतवासी तो बहुत तमोप्रधान दिखायी पड़ते हैं। बहुत दुःखी भी दिखायी पड़ते हैं। ऐसे ही सीढ़ी के चित्र में देख लो। सीढ़ी के चित्र में कलियुग के अंत में जो सीढ़ी में दिखाया गया है, ब्रह्मा बाबा खड़े हैं और कांटों की शैया पर कौन पड़ा है? रामवाली आत्मा कांटो के जंगल में पड़ी हुई है। क्यों? जो कृष्ण वाली आत्मा है उनकी राशि क्रिश्चियन से मिलाई जाती है। तो आखरी जीवन में भी सुखी रहते हैं। गरीब, गरीब नहीं बनते हैं, और रामवाली आत्मा? गरीब; कहने के लिए होती है जवाहरी; लेकिन उसकी दुकान चलती नहीं।

Now, which kinds of souls appear to be happier and more *satopradhan* (consisting mainly in the quality of goodness and purity) in the world? Christians. Indians appear to be very *tamopradhan* (dominated mainly by the quality of darkness or ignorance). They appear to be very sorrowful as well. Similarly, see in the picture of the Ladder. In the picture of the Ladder, in the end of the Iron Age, it has been depicted in the Ladder that Brahma Baba is standing and who is lying on the bed of thorns? The soul of Ram is lying in the jungle of thorns. Why? The horoscope of the soul of Krishna is matched with Christians. So, he remains prosperous even in the last birth. He does not become poor; and what about the soul of Ram? Poor; he is a jeweler for name sake. But his shop does not do well.

तो ब्रह्मा बाबा ने जिसको सच्चा देखा, साफदिल देखा, होशियार देखा, अपने से भी ज्यादा रत्नों का पारखी समझा, उस व्यक्ति को दुकान सौंप करके भागीदार बनाकर के चले गये। तो शास्त्रों के ऊपर से और गुरूओं के ऊपर से उनका विश्वास हट गया। और उस जगह पहुँचे; वहाँ भी डायरैक्ट बताने की हिम्मत नही पड़ी। साक्षात्कारों की बात डायरैक्ट भागीदार को बताने की हिम्मत नहीं पड़ी। वह माताओं से ज्यादा कनेक्टेड थे।

So, the person whom Brahma Baba found to be true, clean-hearted, intelligent, a better judge of gems than him, he entrusted the shop to that person, made him his partner and went away. So, he lost faith on the scriptures and *gurus* and he reached that place. Even there, he did not gather courage to tell him directly, he could not gather courage to tell about the visions to the partner directly. He was more *connected* with the mothers.

<u>जि</u>ज्ञासु – उस समय सेवकराम नहीं था वहाँ? जब गीतामाता को अपने बताये उस समय सेवकराम कहाँ थे? यही कन्फ्युज हो रहा है सबको। <u>बाबा</u> – कहाँ थे? अपनी दुकान में बैठे थे और कहाँ थे? <u>जिज्ञासु</u> – तो वह दुकान में थे, वो घरों पे थी ना! दोनों मातायें घरों पे थी ना! <u>बाबा</u> – हाँ, अलग से माताओं को बताया। <u>जिज्ञासु</u> – तो मतलब सेवकराम किस समय आये? यही पूछा जा रहा है हमको। <u>बाबा</u> – अलग से माताओं ने पूछा। <u>जिज्ञासु</u> – तो वहाँ बाबा नहीं थे? ब्रहमा बाबा नहीं थे वहाँ? <u>बाबा</u> – बच्चा बाद में पैदा होता है कि अम्मा के साथ ही पैदा हो जाता है? <u>जिज्ञासु</u> – तो नहीं आदि माता ने सेवकराम को जो सुनाया..... <u>बाबा</u> – आदि माता अकेली नहीं थी। दूसरी माता मी थी, तीनों मूर्तियाँ होनी चाहिए। **Student:** Was Sevakram not present there at that time? When he (Brahma Baba) told Gita *mata*, where was Ae? He was sitting in his shop; where else could he be? **Student:** So, he was at his shop; they (i.e. the mothers) were at their homes, weren't they? Both the mothers were at homes, weren't they?

Baba: Yes, he narrated to the mothers separately.

**Student:** So, I mean to ask, when did Sevakram come? This is what we are being asked. **Baba:** The mothers asked him [Sevakram] separately.

**Student:** So, was Baba not present there [when the mothers asked Sevakram]? Was Brahma Baba not present there?

**Baba:** Does a child take birth later on or does he take birth along with the mother?

Student: No, whatever the first mother (adi mata) narrated to Sevakram.....

**Baba:** The first mother was not alone. The second mother was also there; all the three personalities should be there.

जिज्ञासु- तो श्रीकृष्ण किसने कहा, कि 'तुम ही श्रीकृष्ण की आत्मा हो'?

<u>बाबा</u> सुनने—सुनाने का काम भक्तिमार्ग करेगा और समझने—समझाने का काम बाप करेगा और तीसरी मूर्ति एक और है जो न्यूट्रल रहनेवाली है। न सुनने—सुनाने में ज्यादा इंट्रेस्टेड, ना समझने—समझाने में ज्यादा इंट्रेस्टेड। प्रैक्टिकल कर्म करनेवाली आत्मा है वह तो। राधा की आत्मा जो प्रैक्टिकल कर्म करके दिखाने वाली है या सुनने—सुनाने और समझने—समझाने वाली है? जिज्ञासु— वो प्रैक्टिकल कर्म करनेवाली है।

बाबा- हां, तो वो तो सुनती रही।

Student: So, who said that you are Shri Krishna, you yourself are the soul of Shri Krishna?

**Baba:** The [one who belongs to] the path of *bhakti* will do the task of listening and narrating and the father will do the task of understanding and explaining and there is one more [personality], a third personality as well, which remains neutral. It is neither more interested in listening and narrating nor more interested in understanding and explaining. It is a soul that performs *practical* actions. Is the soul of Radha the one who does *practical* actions or the one who performs the task of listening and narrating and narrating and the task of understanding and explaining?

**Student:** She is the one who performs *practical* actions. **Baba:** Yes, so, she continued to listen.

<u>जिज्ञासु</u>— तुम ही श्रीकृष्ण हो, ये किसने कहा? तुम ही श्रीकृष्ण हो, तुमको ये सब करना है। <u>बाबा—</u> वो तो जिसने सुना होगा सो ही कहेगा। जिसका सुनने के ऊपर विश्वास होगा वही कहेगा ना! तो श्रीकृष्ण हो गए वो? उनके सुनाने से श्री कृष्ण हो गये कि अंधश्रध्दा बैठ गयी कि मैं ही कृ ष्ण कि आत्मा हूँ, मैं ही ब्रह्मा बनूंगा?

जिज्ञासु– बैठ गयी।

<u>बाबा</u>– हाँ, बैठ गयी बुद्धि में बात।

<u>जिज्ञासु</u> — ये किसके मुख से सुनाया? यही तो पूछ रही हूँ। गीता माता के या सेवकराम के? <u>बाबा—</u> सच्चे के मुख से सुनेंगे तो सच्चे कृष्ण बनेंगे या झूठे कृष्ण बनेंगे? जिज्ञासु— सच्चे कृष्ण।

**Student:** Who said [to Dada Lekhraj], You yourself are Shri Krishna. You yourself are Shri Krishna; you have to do all this.

**Baba:** As regards that, only the one who must have heard will say it. The one who has faith on the process of listening will say so, will he not? So, did he become Shri Krishna? Did he become Shri Krishna on being said by her (mother) or did he develop a blind faith [for the clarification], I myself am the soul of Krishna, only I will become Brahma?

Student: It fitted.

Baba: Yes, it fitted in the intellect.

**Student:** Through whose mouth was it narrated? This is what I am asking. [Was it narrated] through the mouth of Gita *mata* or through Sevakram?

**Baba:** When he listens through the mouth of the true one, will he become a true Krishna or a false Krishna?

Student: True Krishna.

बाबा— उन दोनों माताओं में सच्ची कौन और झूठी कौन है? एक सच्ची गीता और एक झूठी गीता। झूठी गीता से नरक बनता है। ब्राइमणों की संगमयुगी दुनिया में भी नरक बनता है। वह है वर्ल्ड मदर। वर्ल्ड मदर माना क्रिश्चियन्स की भी मदर हैं, मुसलमानों की भी मदर है, बौद्धियों की भी मदर है, नास्तिकों की भी मदर है। और एक है भारतमाता; जो पहली अव्यक्त वाणी में बोला है — भारत माता शिवशक्ति अवतार अंत का यही नारा है। अंत में निकली हैं ज्ञान—गंगायें। जो ज्ञान—गंगायें पतितों को पावन बनाने के निमित्त बनती हैं। आदि में ब्रह्मा बाबा जिस माता से प्रभावित हुए, जिस माता का सारा कंट्रोल चलता था, वो माता कौन थी जिसमें शिव बाप प्रवेश करते थे? अरे! ऐसी माता भी तो थी उन दोनों माताओं में से जिसमें प्रवेश होता था। प्रवेश पतितों में होता है या पावन में होता है? (सबने कहा — पतित में।) जरूर दोनों माताओं में से एक माता ज्यादा पतित बनने वाली है।

<u>जिज्ञासु</u>– गीता माता। <u>बाबा–</u> नहीं, गीता माता तो दोनों ही हैं।

<u>जिज्ञास</u>ु– बड़ी।

**Baba:** Between those two mothers, who was true and who was false? One is the true Gita and the other is the false Gita. Hell is created by the false Gita. A hell is created in the Confluence Age world of Brahmins as well. She is the world mother. World mother means that she is the mother of Christians as well as the mother of Muslims. She is the mother of Buddhists as well as the mother of a theists. And another one is the Mother India (*Bharat mata*) about whom it has been said in the first *Avyakta Vani*: Mother India, the Shiv *Shakti* incarnation; this is the slogan of the end. The Gangas (the river Ganges) of knowledge have emerged in the end, the Gangas of knowledge who become instruments in purifying the sinful ones. The mother who influenced Brahma Baba in the beginning, the mother who used to control everything, who was that mother in whom the Father Shiv used to enter? Arey! There was one such mother also between those two in whom Shiv used to enter. Does entry [of Shiv] take place in sinful ones or in a pure one? (Everyone said – in the sinful one.) Definitely one of the two mothers becomes more sinful.

Student: Gita Mata.

**Baba:** No, both are Gita *Matas*. **Student:** The senior one.

<u>बाबा</u>— हाँ, एक मनुष्यों की मानी हुई, बतायी हुई, जानी हुई गीता माता और एक है सच्ची गीता जिसका परिचय भगवान बाप आकर के देते हैं। तो ब्रह्मा बाबा भी वो उसके प्रभाव में थे। किसके प्रभाव में थे? उस माता के प्रभाव में थे जिससे उन्होंने सुना कि मैं कृष्ण बनने वाला हूँ, मेरा ही ब्रह्मा का पार्ट है। तो उस भनक में आकर के सन् 47 में जब कन्यायें—मातायें सिंध हैदराबाद से भागी और कराची में आके इकट्ठी हो गयी तो ब्रह्मा बाबा का पक्का निश्चय, सौ पर्सेन्ट नशा चढ़ गया और उन्होंने अपने को घोषित कर दिया ''मैं कृष्ण भगवान हूँ।'' गीता का साकार भगवान इस सृष्टि पर अगर कोई है तो मैं हूँ।

**Baba:** Yes, one is the mother Gita who is accepted by people, spoken of by the people, known by the people and the other is the true Gita whose introduction God, the Father comes and gives. So, Brahma Baba too was under her influence. Under whose influence was he? He was under the influence of that mother from whom he heard that he will become Krishna, that he himself was going to play the part of Brahma. So, under that influence, when virgins and mothers ran away from Sindh, Hyderabad and gathered at Karachi in the year [19]47, Brahma Baba developed firm faith, and his intoxication rised hundred percent and he

declared about himself, "I am God Krishna'. If there is any corporeal God of the Gita in this world, it is me.

तो पहला-पहला दुनिया का सबसे बड़ा मनुष्य गुरू कौन हुआ? ब्रह्मा बाबा स्वयं दुनिया के बड़े ते बड़े गुरू हो गये। इसलिए दुनिया में ब्रह्मा के मंदिर, भल ब्रह्मा का सबसे बड़ा काम उन्होंने ही किया, ऐसी सहनशीलता और किसीने दिखायी भी नहीं; लेकिन फाउंडेशन जो मजबूत होना चाहिए वो सुनने-सुनाने का भक्तिमार्ग का फाउंडेशन था। इसलिए ब्रह्मा की मिसाल गाँधीजी से दे दी है। गाँधीजी कहता था, मैं रामराज्य स्थापन करूंगा, रामराज्य में जाऊंगा, रामराज्य लाऊंगा, स्वर्ग बनाऊँगा; लेकिन और ही रामराज्य के बजाय रावण राज्य स्थापन हो गया। वह हद का गाँधी था और ये? ये बेहद के गाँधी।

So, who is the first and biggest human *guru* of the world? Brahma Baba himself happens to be the biggest *guru* of the world. This is why Brahma's temples in the world...; although the biggest task of Brahma was performed by him alone; nobody else showed such tolerance either, but the foundation which should be strong, was a foundation of listening and narrating of the path of *bhakti* (devotion). This is why Brahma is compared with Gandhiji. Gandhiji used to say, I will establish the kingdom of Ram, I will go to the kingdom of Ram, I will bring about the kingdom of Ram; I will establish heaven; but instead of a kingdom of Ram, a kingdom of Ravan was established. He was the Gandhi in a limited sense and this one? This one is the Gandhi in an unlimited sense.

उस गाँधी के लिए बोला, वो बेहद के गाँधी के लिए भी बोला, मुरली में बोला, ''गाँधी मरा राजकोट में कोई साहूकार कांग्रेसी के यहाँ जाकर जन्म लिया।'' तो बेहद का गाँधी भी शरीर छोड़ा तो जाकर कहाँ जन्म लेता है? राजकोट, राजाओं का किला। राजाओं का जहाँ किला माने संगठन। जहाँ राजाओं का एडवांस पार्टी का संगठन तैयार होता है, वहाँ किसी साहूकार कांग्रेसी में; स्थूल धन का कि ज्ञानरत्नों का? ज्ञानरत्नों का साहूकार जो कांग्रेसी है उसमें प्रवेश कर जाती है और बच्चे के रूप में पढ़ाई पढ़ती है।

It has been said for that Gandhi, it has been said for that Gandhi in an unlimited sense too, in the *Murli*, "When Gandhi died, he took birth at the home of a prosperous Congressman." So, when the unlimited Gandhi, too, leaves his body, where does he go and take birth? [He takes birth at] Rajkot (also a place in Rajasthan), a fort of kings. A place where there is a fort of kings, i.e. gathering. (He enters) in a prosperous Congressman of the place where the gathering of kings of the Advance Party takes place; [is he prosperous] in physical wealth or in the gems of knowledge? He enters the Congressman who is prosperous in the gems of knowledge and then studies knowledge in the form of a child.

तो बेहद का गाँधी भी ब्रह्मा साबित हो जाता है। उन्होंने नशे में आकर के सन् 47 में हिन्दुस्तान—पाकिस्तान का जब बंटवारा हुआ तो अंदर से पक्का कर लिया कि ब्रह्मा के रूप में मुझे नयी सृष्टि की रचना करनी है और माऊंट आबू में आकर के घोषित कर दिया 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय'; नहीं तो प्रजापिता शब्द लगाते, प्रजापिता का नामनिशान गुम कर दिया। तो अपने नाम के आधार पर उन्होंने ब्रह्माकुमारी विद्यालय का नाम रख दिया। नहीं तो पहले तो ओम् मंडली नाम था या ब्रह्माकुमारी विद्यालय नाम था? ओम् मंडली नाम था। ओम् शब्द में तीनों ही आ जाते हैं, आ, ऊ, म – ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। वो कॅन्सल कर दिया।

So, Brahma is proved to be the Gandhi in an unlimited sense. When partition of India and Pakistan took place in the year (19)47, he became intoxicated and decided firmly within his mind: I have to create the new world in the form of Brahma and after coming to Mt. Abu he declared the [establishment of] 'Brahmakumari Ishwariya Vishwa Vidyalay'. Otherwise, he would have added the word 'Prajapita'; he removed the name and trace of Prajapita. So, on the basis of his name he named Brahmakumari Vidyalay. Otherwise, was the name 'Om

*Mandali*' or was it 'Brahmakumari Vidyalay' earlier? It was *Om Mandali*. The word '*Om*' includes all the three: '*Aa*' '*U*', '*Ma*' – Brahma, Vishnu, [and] Shankar. That was cancelled.

<u>समय–19.50 से 20.45</u>

जिज्ञासु– बाबा, राम–सीता को मन्दिरों में बैठा हुआ दिखाते है, और लक्ष्मीनारायण को खड़ा दिखाते हैं। क्यों?

<u>बाबा—</u> लक्ष्मी—नारायण का जो चित्र है, उसमें जो लक्ष्मी—नारायण खड़े हुए दिखाये गये हैं, वो स्वर्ग की दुनिया में खड़े हुए दिखाये गये हैं या संगमयुगी प्रकाश, ज्ञान प्रकाश की दुनिया में खड़े हुए दिखाये गये हैं?

<u>जिज्ञास</u>ु— ज्ञान प्रकाश में।

## Time: 19.50-20.45

**Student:** Baba, Ram and Sita are shown in a sitting posture in the temples whereas Lakshmi and Narayan are depicted in a standing posture. Why?

**Baba:** In the picture of Lakshmi and Narayan, the Lakshmi and Narayan who are shown to be standing; are they shown standing in the world of heaven or in the world of Confluence Age light, in the light of knowledge?

**Student:** In the light of knowledge.

<u>बाबा—</u> ज्ञान प्रकाश में। तो ज्ञान प्रकाश में खड़ा रहना अच्छा या पड़ा रहना अच्छा या बैठ जाना अच्छा? (सबने कहा — खड़ा रहना।) यहाँ राजाई भोगनी चाहिए या सेवा करना चाहिए? हमारा बाप तो आया ओबिडियंट सर्वेंट बनकरके; तो ब्राहमणों को ओबिडियन्ट सर्वेंट ही बनकरके रहना चाहिए या राजाई जमाके बैठना चाहिए? ये करो, वो करो, ये कैसे नहीं हुआ, ये तुमने क्यों नही किया? दूसरों को .......सेवाधारी बनके रहो।

**Baba:** In the light of knowledge. So, is it better to stand in the light of knowledge or is it better to lie down or to sit? (Everyone said – To remain standing.) Should we enjoy kingship here or should we serve? Our Father has come as an obedient servant; so should the Brahmins remain as obedient servants or should they establish their kingships [here]? [Should they order:] do this, do that, why has this not been done, why did you not do this? Others.....Remain as a *sevadhari* (a server).

## समय – 43.07 से 44.21

जिज्ञासु– बाबा, ग्रेट–ग्रेट ग्रैण्डफादर बाबा शिवबाबा को कहते है या प्रजापिता को?

<u>बाब</u>, उँचा और नीचा, ये साकार दुनिया की बात है या निराकारी दुनिया की बात है? साकारी दुनिया की बात है। ग्रेट-ग्रेट कहेंगे तो दूसरों से तुलना की गयी ना! ग्रेट-ग्रेट कहा तो माने किसी से तुलना की गयी। या कहते है, देव-देव महादेव माना, नीचा देवता फिर उससे ऊँचा – देव से देव। फिर उससे ऊँचा? – महादेव। तो ऐसे ही यहाँ भी ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्डफादर। माने जो और धर्मपितायें है वो ग्रेट तो हैं; लेकिन ग्रैण्डफादर नहीं हैं। वो सिर्फ शिवबाबा ही है। वो उन धर्मपितायें जो ग्रेट फादर्स हैं, उनका भी बाप है। इसलिए ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्डफादर है। उनको भी पढ़ाई पढ़ाने वाला है। उनको भी अपनी पहचान देने वाला है कि तुम हो धर्मपिता। तुमको द्वापर के आदि में आकर के इब्राहीम, बुद्ध, क्राईस्ट ऐसा बनना हैं।

## Time: 43.07-44.21

**Student:** Baba, whom does Baba refer to as the great-great-grandfather, [is it] Shivbaba or Prajapita?

**Baba:** Is the topic of 'high and low' about the corporeal world or about the incorporeal world? It is about the corporeal world. When someone is called 'great-great', a comparison has been made with others, hasn't it? When someone has been called 'great-great', then a comparison has been made with someone. Or when we say, '*Dev-Dev-Mahadev*', it means that there is a lowly deity, then the one who is higher than him [i.e.] a deity higher than another deity (*dev se dev*); then who is greater than that deity? *Mahadev* (the greatest deity).

So, similarly, here, too, it is great-great-grandfather. It means that the other religious fathers are no doubt great, but they are not grandfathers. Only Shivbaba is that (grandfather). He is the father of even those religious fathers who are great fathers. That is why he is the great-great-grandfather. He is the one who teaches them too. He gives them their introduction too: you are the religious fathers. You have to come in the beginning of the Copper Age and become this [i.e.] Abraham, Buddha, Christ.

<u>समय–1.28 से 5.08</u>

जिज्ञासु- बाबा मुरलियों का अर्थ समझाना कब से शुरू हुआ?

<u>बाबा</u>— टीचर का रूप कबसे शुरू होता है? जब सुप्रीम टीचर प्रत्यक्ष होगा तो बाप भी प्रत्यक्ष होगा; क्योंकि बाप, टीचर और सद्गुरू का रूप तो एक ही है। अलग—अलग रूप तो है नहीं।

जिज्ञासु– इसलिए पूछ रहा हूँ क्योंकि मुरलियों का रेकॉर्ड होना तो 90 से शुरू हुआ ना।

<u>बाबा</u>— रेकार्डिंग भले बाद में हो। साधन बाद में आते है और साधना पहले से ही मौजूद होती है। Time: 1.28-5.08

Student: Baba, when did the task of explaining the meanings of *Murlis* begin?

**Baba:** When does the form of the teacher begin? When the Supreme Teacher is revealed, the Father will also be revealed because the form of the Father, Teacher and *Sadguru* is the same. They are not different forms.

**Student:** I am asking because the recording of *Murlis* began only from [19]90, didn't it? **Baba:** Although recording may have started later on ... materials (*sadhan*) come later but the effort (*sadhna*) is present well before.

जिज्ञासु– आप बोले थे ना बाबा कि आदि की मुरलियां बहुत पावरफुल होते थे।

बाबा- मुरलियाँ किसे कहते हैं?

<u>जिज्ञासु</u>– बाबा भी सुनकर, उनको भी नशा आता है। मुरलियों को सुनकर।

<u>बाबा</u>— अभी नहीं नशा चढ़ता है?

जिज्ञासु– पर उनसे कम होगा; क्योंकि.....

<u>बाबा</u>— क्यों?

जिज्ञासु– क्योंकि अवस्था सतो से तमो हो......

<u>बाबा</u> अच्छा, माना शंकर वाली या रामवाली आत्मा होगी उसको सन् 76 में ज्यादा नशा चढ़ा हुआ होगा और अब नशा उतर गया।

Student: Baba, you had said that the initial Murlis were very powerful.

Baba: What is meant by *Murlis*?

**Student:** Baba also develops intoxication by listening to them, by listening to the *Murlis*. **Baba:** Doesn't the intoxication rise now?

Student: But it will be less than them (the early *Murlis*) because......

Baba: Why?

**Student:** It is because the stage changes from *sato* (consisting mainly in the quality of goodness and purity) to *tamo* (dominated by the quality of darkness or ignorance)....

**Baba:** OK, it means that the intoxication of the soul of Shankar or Ram was raised more in the year [19]76 and that the intoxication has decreased now.

जिज्ञासु– कहा है, 76 में ही बाप की पढ़ाई पूरी हो गयी।

<u>बाबा</u> हां, ये कह सकते है कि 76 में बाप बाप के रूप में प्रत्यक्ष हो जाता है, बच्चे तो बच्चे ही होते हैं।

<u>जिज्ञासु</u>— पहले की मुरलियाँ जो समझायी जाती, जो समझ में आता है वह अभी की मुरलियों में उतना समझानी नहीं मिलती है ना।

<u>बाबा–</u> हाँ, पहले शार्प एण्ड शॉर्ट माल था। सार अच्छा होता है या विस्तार अच्छा होता है? सार अच्छी चीज होती है। जैसे द्वापर के आदि में जो शास्त्र बने थे, वह माल असली था या फिर बाद में शास्त्रों के जो इंटरप्रिटेशन निकल गये और शास्त्रों का विस्तार होता गया वो अच्छा माल था? शुरू का माल अच्छा था। ओल्ड इज गोल्ड; लेकिन अभी टी.वी. निकल गया ना तो टी.वी देखना ज्यादा पसंद आता है। जो पुरानी कैसिटें हैं, पुरानी रिकार्डिंग है, सडी़ गली जैसी; भले बहुत फास्ट है, शॉर्ट में है, सार रूप में है; वह कोई नहीं सुनता अब।

**Student:** It has been said that the father's study was over in 76 itself.

**Baba:** Yes, we can say that the father is revealed in the form of the Father in 76; children are anyway children.

**Student:** The *Murlis* which used to be explained earlier, whatever we understand in it, we do not get that [much] explanation in the present day *Murlis*, do we?

**Baba:** Yes, earlier the material [of knowledge] was *sharp* and *short*. Is essence better or expansion better? Essence is better. For example, were the scriptures that were made in the beginning of the Copper Age the real material or were the interpretations of the scriptures that emerged later on and the expansion of scriptures that took place, a better material? The material in the beginning was better. Old is gold; but now TV has emerged, hasn't it? So, people like watching TV more. The old cassettes, old recordings which are in a rotten condition; although they may be very fast, they are short, in essence form. Nobody listens to them now.

जिज्ञासू- पुरानी कैसेट में तो अष्ट रत्न के बारे में है, अष्टदेवों के बारे में तो नहीं है।

बाबा— क्योँ? है क्यों नहीं, सब कुछ हैं। मुरलियों में ही सब कुछ हैं। क्लेरिफिकेशन की तो बात ही छोड़ो। अरे, वेदवाणी में ही सारे शास्त्रों का सार समाया हुआ है। ये महाभारत तो बाद में लिखा गया।

<u>जिज्ञासु</u>– पर उससे पहले जो मुरलियाँ चली थी वो उनमें कुछ नहीं था...... रेकॉर्ड होने से पहले जो भी मुरलियाँ चली थी.....

बाबा— वही तो सच्ची गीता सार है।

**Student:** In the old cassettes the eight gems have been mentioned. There is no mention of the eight deities.

**Baba:** Why? Why is it not there? Everything is there. There is everything in the *Murlis* itself. Leave the topic of clarification alone. *Arey*, the essence of all the scriptures is in the *Vedvani* itself. This Mahabharata was written later on.

**Student:** But the *Murlis* (clarification) that were narrated before that, did it not contain anything....the *Murlis* that were narrated before the process of recording began [in 1990]. **Baba:** That itself is the essence of the true Gita.

.....

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.